Tel. : 9342254131

ओ३म्

Email : aryasamajmarathalli@yahoo.co.in
www.bangalorearyasamaj.com

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य ज्योति
ARYA JYOTI
ಆರ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ

July-2024

Arya Samaj Marathalli Monthly Newsletter

Sunday Weekly Satsang : 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

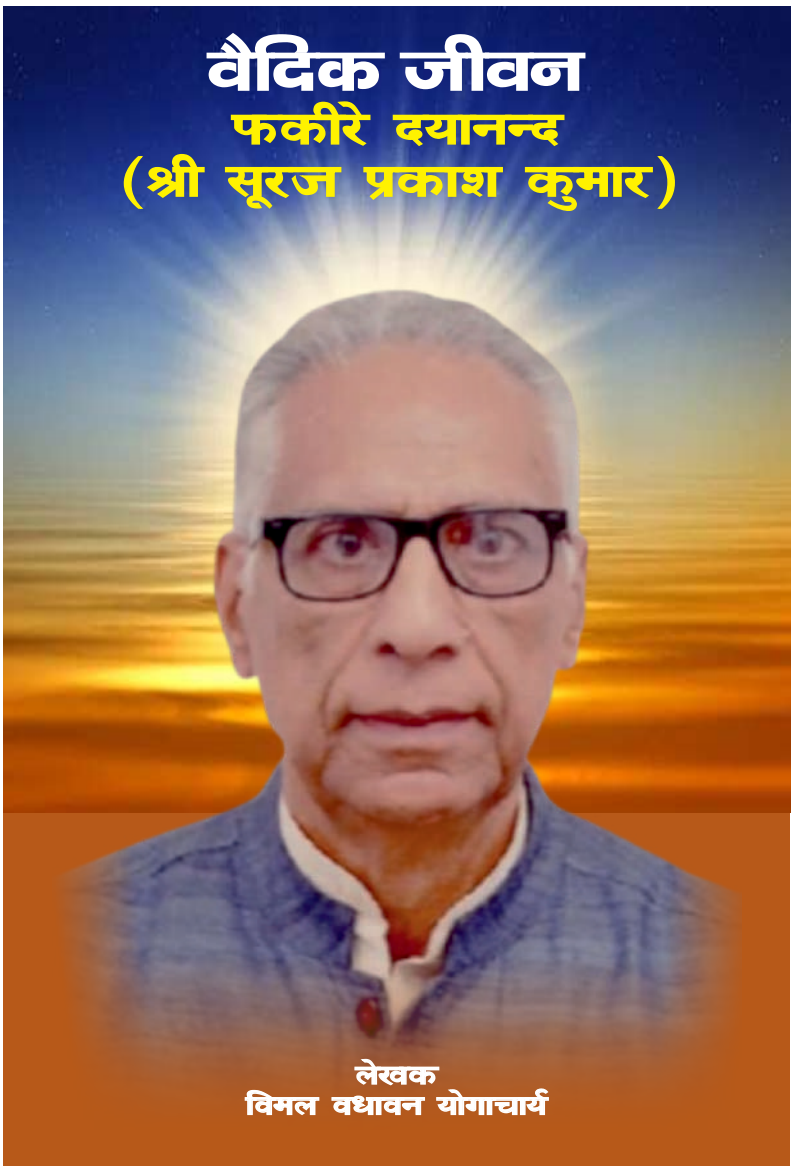

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के संस्थापक फकीरे दयानन्द जी (श्री एस.पी. कुमार) के जीवन से सम्बन्धित पुस्तक 'वैदिक जीवन' का विमोचन समारोह

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के संस्थापक फकीरे दयानन्द जी (श्री एस.पी. कुमार) के 78वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में उनके जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को समाहित करते हुए 'वैदिक जीवन' नामक पुस्तक का सफल प्रकाशन कराया गया। इस पुस्तक का लेखन आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अनेक पदों पर विराजमान रहे तथा सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री विमल वधावन योगाचार्य जी ने किया है। श्री कुमार साहब का जन्मदिन 3 जुलाई, 2024 को है, जिसे आर्य समाज के भवन में यज्ञ करके मनाया जायेगा तथा 'वैदिक जीवन' नामक पुस्तक का विमोचन आर्य समाज के रविवारीय सत्संग 7 जुलाई, 2024 को प्रातः 11 बजे कर्नाटक के सुप्रसिद्ध बिल्डर्स तथा धार्मिक और सामाजिक सेवा में अग्रणी श्री एस. जयराम जी के कर–कमलों द्वारा किया जायेगा।

इस अवसर पर 'वैदिक विवेक' कार्यक्रम का शुभारम्भ पूज्य स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी महाराज के निर्देशन में प्रारम्भ किया जायेगा। कार्यक्रम में मुख्य उद्‌बोधन समाजसेवी अमेरिकावासी श्रीमती सिम्मी माई जी (सिमरनजीत कौर) का रहेगा तथा वैदिक संगीत का कार्यक्रम श्रीमती लक्ष्मीराम तथा श्रीमती वाणी द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा। आप सभी से विनम्र निवेदन है कि इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

हमारे सत्संग

वेद में सम्पूर्ण गणित विद्यमान है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 2 जून, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए फकीरे दयानन्द जी (श्री एस. पी. कुमार) ने वेद के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की और आर्य समाज का पहला ही नियम है कि सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है। हम भौतिक यज्ञ के माध्यम से त्याग की भावना का अनुसरण करें और अन्य लोगों के कल्याण की भावना से सभी कार्य करें। जब हम यज्ञ करते हैं तो उसमें अनेकों लोगों का हाथ होता हैं। कोई घी देता है, कोई विविध पदार्थों सामग्री बनाते हैं। इस तरह से जब सामग्री तैयार होती है उससे पहले अनेक लोगों का संगतिकरण होता है। उसमें सभी का त्याग, परिश्रम सम्मिलित है। यह संगतिकरण का प्रतीक है। आठ लोग बैठकर पूजा कर रहे हैं तो केवल उन्हीं का संगतिकरण नहीं है बल्कि उन सभी लोगों का है जिनका–जिनका योगदान यज्ञ के सामग्री एवं समिधा के उत्पादन में है। यज्ञ वातावरण को शुद्ध करता है। हम वायु को पवित्र कर रहे हैं, जल पवित्र कर रहे हैं। जब वायु और जल पवित्र होंगे तो हमें शुद्ध भोजन की सामग्री मिलेगी और पर्यावरण भी शुद्ध होगा। जब हम इदन्न मम् करके अग्नि में आहुतियाँ डालते हैं तो सामग्री कम होती जाती है अर्थात् जो हमें मिला था उसे हम समर्पित कर देते हैं। एक यज्ञ का अर्थ है संगतिकरण अर्थात् योग करना। उन्होंने कई मन्त्रों का चार्ट बनाकर यज्ञ की महिमा को विस्तार से बताने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि वेद चार खण्ड में हैं और वेद में कुल 20379 मन्त्र हैं। वेद में अंकगणित, बीज गणित और रेखागणित पहले से ही विद्यमान है। उन्होंने वेद मन्त्रों के चार्ट के माध्यम से वेदों में गणितीय विद्या को विस्तार से समझाया। कुमार साहब ने कहा कि वेदों में हर संख्या का नाम है। उन्होंने कहा कि हमारे यहां अंकों में पूर्णता मिलेगी जबकि अंग्रेजी कलेंडर में ऐसा नहीं मिलता है। उन्होंने कहा कि जो यज्ञ केवल परोपकार की भावना से किये जाते हैं उसका प्रभाव बढ़ता जाता है। उसका लाभ असीमित होता है, बढ़ते–बढ़ते अगली पीढ़ियों तक जाता है। जो लोग त्याग की भावना से यज्ञ करते हैं उन्हें कई जन्मों तक इस यज्ञ का लाभ प्राप्त होता है। जिस प्रकार से गाय दूध देती है और उसकी बछिया भी आगे चलकर हम सभी के लिए दूध देती है और उस बछिया की भी बछिया आगे चलकर दूध देती है। इसी तरह से विशेष यज्ञ का भी लाभ मनुष्य को हर जीवन में प्राप्त होता है। जब हम परोपकार के कार्य करते हैं तो हमारे मन में उत्साह की भावना पैदा होती है, हमें संतोष प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि जब हम अच्छा कार्य करेंगे तो हमे अच्छा परिणाम मिलेगा और गलत करेंगे तो गलत परिणाम मिलेगा। इसलिए हम सभी को अपने जीवन में अच्छा कार्य करते हुए समाज एवं राष्ट्र के लिए परोपकारी कार्य करते रहना चाहिए। वेद भारत की धरती से ही उत्पन्न हुई, परन्तु वेद के शोध का नोबेल पुरस्कार विदेशी लोगों को मिल गया है। क्योंकि हम सभी ने इस पर विशेष अध्ययन नहीं किया। जबकि वेद को हमारे ऋषि–मुनियों ने आगे बढ़ाया। वेद ज्ञान मूल ज्ञान है, सब सत्य विद्या इसमें निहित है। ईश्वर ने हमें सभी ज्ञान वेद में उपलब्ध कराया है। इसीलिए महर्षि दयानन्द जी ने कहा था कि वेदों की ओर लौटो, क्योंकि उन्हें पता था कि वेद में सभी ज्ञान निहित हैं।

ईश्वर के समान कोई दूसरा नहीं है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 9 जून, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने कहा कि सत्य को जानने के लिए, ब्रह्मतत्व को जानने के लिए संसार में कई विचारधाराएं हैं। इस सत्संग के माध्यम से यह जानना और समझना आवश्यक है। यदि हम सत्य को नहीं जान सकें हैं तो हमारे अन्दर निश्चित रूप से कमी है। महर्षि दयानन्द जी के जीवन को देखेंगे तो पता लगेगा कि उनका अध्ययन और चिन्तन कितना महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अपने ग्रन्थों और पुस्तकों में इसका उद्धरण किया हुआ है। उन्होंने कई ग्रन्थों का अध्ययन किया, सभी धर्मों के ग्रन्थों का अध्ययन किया। आज के समय में किसी के पास इतना समय नहीं है कि इतनी सारी पुस्तकें और ग्रन्थ पढ़ सकें। इसलिए सत्संग में आकर अपना ज्ञानवर्द्धन करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। आज मैं त्रैतवाद के कुछ मन्त्रों को रखकर उनके अर्थों के सम्बन्ध में अपने विचार रखूंगा। उन्होंने कहा कि यूरोप के विद्वान् अरस्तू के समय आत्मा को अलग मानने का संदेश था। आत्मा को ईश्वर से अलग मानने का ज्ञान था। एकत्ववाद का अर्थ अद्वैतवाद है। 18वीं शताब्दी के बाद जो सिद्धान्त प्रतिपादित हुए वे दो थे – एक सिद्धान्त यह है कि यह संसार जड़ से उत्पन्न हुआ और उसमें चेतन भाव आ गया। दूसरा सिद्धान्त है कि चेतन से सभी उत्पन्न हुआ यह सिद्धान्त आदि गुरु शंकराचार्य का है। बौद्ध धर्म वालों का एक उदाहरण बताते हुए आचार्य जी ने कहा कि एक बार नदी के किनारे खड़े होकर बौद्धों ने कहा कि जो जल अभी था वह आगे बढ़ गया और जो अब है वह भी थोड़ी देर में नहीं रहेगा आगे बढ़ जायेगा उसी तरह से यह जीवन है अभी कुछ और थोड़ी देर बाद कुछ और हो जायेगा। शरीर में पुरानी कोशिकाएं खत्म हो गई और नई कोशिकाएं आ गई। बौद्धवाद का मानना है कि ईश्वर से ही सब कुछ उत्पन्न हुआ है बिना ईश्वर के कुछ नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि ईश्वर के जैसा कोई है नहीं। अद्वैतवाद यानि ईश्वर के समान और कोई दूसरा नहीं है। आदि गुरु शंकराचार्य कहते हैं कि ईश्वर के अतिरिक्त कोई है ही नहीं है। विशिष्ट त्रैतवाद का मानना है कि ब्रह्म तो है लेकिन माया भी है। जिस प्रकार घड़ा मिट्टी से बना है, लेकिन घड़े का अलग महत्त्व है और मिट्टी का महत्त्व अलग है। बौद्ध कह रहे हैं दोनों अलग–अलग है, आदि गुरु शंकराचार्य कह रहे हैं दोनों एक ही है। जिस प्रकार से वृक्ष होता है उसमें डाली है, पत्ते हैं, जड़ है, तना है। ये सभी पेड़ के ही हिस्से हैं, उसी में लगे हैं। त्रैतवाद के सम्बन्ध में एक उदाहरण देकर बताते हुए कहा कि जैसे किसी ने कहा कि आर्य समाज मारतहल्लि के निर्माणकर्ता आदरणीय कुमार जी हैं, इस आर्य समाज मारतहल्लि के सर्वेसर्वा मालिक आदरणीय कुमार जी हैं, यह सिद्धान्त अद्वैतवाद कहलायेगा। कुछ लोग कह रहे हैं कि आर्य समाज मारतहल्लि के निर्माण में कुमार साहब का तो योगदान है और जिन्होंने ईंट, पत्थर लगवाये, जिन्होंने कानूनी अड़चन दूर करने के लिए अपना योगदान दिया, जिन्होंने अपना सात्विक दान दिया, समय देते हैं उनका भी योगदान है यह द्वैतवाद सिद्धान्त कहलाता है। तीसरे व्यक्ति कह रहे हैं कि आदरणीय कुमार जी सर्वेसर्वा तो हैं, दान देने वाले भी हैं तथा अन्य लोग भी हैं, परन्तु यदि ईंट, पत्थर, बालू, सरिया, लोहे आदि नहीं मिले होते, पानी नहीं मिला होता तो हम यहां आकर क्या करते, यह सिद्धान्त त्रैतवाद कहलाता है। जो पहला सिद्धान्त है उसे आदरणीय कुमार साहब भी शायद नहीं मानेंगे। इसलिए अद्वैतवाद को कोई नहीं मानेंगे।

जब तक सभी की भागीदारी नहीं होगी तब तक विकास नहीं हो सकता। इसलिए त्रैतवाद का सिद्धान्त सर्वमान्य है। जिसमें सभी की भागीदारी को मानने के लिए सभी सहमत होते हैं। एक ही वृक्ष है, लेकिन उसमें पत्ते भी हैं, डाली भी है, फल भी हैं। यही त्रैतवाद का सिद्धान्त है।

पितृयज्ञ प्रतिदिन करना चाहिए

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 16 जून, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए वैदिक विद्वान् श्री रवि भटनागर जी ने देश में मनाये जाने वाले दिवसों पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि जून माह का तीसरा रविवार फादर्स डे के रूप में मनाया जाता है और 21 जून विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जाता है और अब हम लोगों ने भी 3 मई को विश्व यज्ञ दिवस के रूप में मनाना शुरू कर दिया है, परन्तु यह सब केवल एक दिन मना लेने से किसी का भला नहीं होने वाला है। इसलिए हम सभी को अपने बड़ों का प्रतिदिन आदर करना चाहिए। आजकल जो फादर्स डे, मदर डे मनाने का प्रचलन चला है वह केवल एक दिन का ही है। इस पाश्चात्य सभ्यता ने परिवारों का पूरा ढांचा बिगाड़कर रख दिया। उन्होंने कहा कि हमारे दादा–दादी, नाना–नानी और माता–पिता ने कितने दुःख, कष्ट सहकर हम सभी को पाला–पोषा परन्तु आज उनकी उपेक्षा हो रही है। इसीलिए पाश्चात्य समाज के लोगों ने सोचा कि चलो इनके लिए कम से कम एक दिन निर्धारित करके इनका मान रखने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि आजकल बच्चे माता–पिता को बेदखल कर रहे हैं, यह कितना घृणित कार्य है। यह वैदिक परम्परा के विपरीत है।

श्री भटनागर जी ने मुम्बई की एक सच्ची घटना बताते हुए कहा कि मुम्बई के एक अपार्टमेंट में माता आशारानी जी रहती थीं और उनका बेटा उन्हें छोड़कर चला गया था। कुछ दिन बाद कोई मिलने आया और घंटी (बेल) बजाता रहा परन्तु कोई अन्दर से आवाज नहीं आई तो उन्होंने पड़ोसियों से पूछा तो कई लोग तो नहीं बता पाये परन्तु एक व्यक्ति ने बताया कि हां वे यहीं पर रहती हैं, परन्तु ज्यादा जानकारी हमें भी नहीं है। किसी तरह से उस माता ने दरवाजा खोला एकदम बूढ़ी हो गई थीं और उन्होंने बातचीत की और अपनी परेशानियों को बताया और कहा कि कोई मेरे बेटे से बात करवा दे और वह मुझे किसी वृद्धाआश्रम में छोड़ दे जिससे मैं अपनी बची हुई जिन्दगी को सही ढंग से काट सकूं। श्री भटनागर जी ने बताया कि कुछ महीनों के उपरान्त माता जी का दरवाजा नहीं खुला तो पुलिस को बुलाकर दरवाजा काटकर खोला गया तो पाया कि बेड पर लटकी हुई केवल हड्डियों का कंकाल मिला। इस भयावह स्थिति को देखकर सभी लोग दंग रह गये। पुलिस ने उनका किसी तरह से अन्तिम संस्कार करवाया।

श्री भटनागर जी ने कहा कि पाश्चात्य सभ्यता हमारे देश में हावी होती जा रही है। आज उसी का परिणाम है कि बच्चे एक दिन फादर्स डे, मदर–डे मनाकर उन्हें कुछ उपहार या चॉकलेट या मैसेज आदि के माध्यम से अपना फर्ज पूरा करके अपनी आधुनिकता की चकाचौंध में लग जाते हैं। आगे उन्होंने बताया कि इससे आगे चलकर एक माह के बाद पितृ पक्ष को बनाया गया है जिसमें लोग अपने मरे हुए पितरों का श्राद्ध करते हैं जो कि उन पितरों को मिलता ही नहीं। इसका लोगों को ज्ञान ही नहीं है। पितर हमारे जीवित माता, पिता, बड़े–बुजुर्ग, किसान ये सभी हमारे पितर होते हैं, हमें इनका सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें वास्तविक स्थिति को जानना है तो हमें वैदिक संस्कृति की ओर जाना होगा।

श्री भटनागर जी ने अपने परिवार की एक घटना बताते हुए कहा कि हमारे बेटे और बहू सिंगापुर में रह रहे हैं। उन्होंने बताया कि पढ़ाई के दौरान बेटे को प्रथम स्थान और बहू को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ तो उनके दीक्षान्त समारोह मुझे और मेरी धर्मपत्नी को बुलाया गया तो हम लोग गये तो हमारे बच्चों ने हमारा बहुत आदर सत्कार किया और हमें सिंगापुर घुमाया तो वहां के ड्राइवर ने कहा कि हमने यहां पर किसी को ऐसा नहीं देखा जो अपने काम को छोड़कर अपने माता–पिता को घुमा रहा हो। उस ड्राईवर ने कहा कि हमारी पत्नी और बच्चे कहां–कहां और क्या–क्या करते हैं हमें खुद ही नहीं पता है। उन्होंने कहा कि यह सब बताने का मतलब यह है कि आप अपने बच्चों को संस्कारित करें जिससे आगे चलकर यह बच्चे अपने पितरों (जीवित माता और पारिवारिक वृद्धजनों) का सम्मान करें। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति है 'मनुर्भव' मनुष्य बनों, आर्य बनों। जो अच्छा कार्य करेगा वह अच्छा आदमी बनेगा और जो खराब कार्य करेगा वह खराब बनेगा। जो अच्छे कार्य करेंगे वह आर्य बन जायेंगे। हमारे कर्म श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर एवं श्रेष्ठतम होने चाहिए। जो सबसे अच्छे कार्य है वह श्रेष्ठतम की श्रेणी में आते हैं। जैसे यज्ञ हमारा सर्वश्रेष्ठतम कार्य है।

श्री भटनागर जी ने कहा कि जब हम यम–नियम का पालन करेंगे तभी हमारे जीवन में योग का महत्त्व है। जब हम पांच यम और पांच नियम का पालन सही तरीके से करेंगे तभी संन्ध्या करने का भी लाभ होगा, अन्यथा आप सारे दिन बैठे रहें आपका मन संयमित नहीं हो सकता। याज्ञवलक्य ने कहा कि इस संसार में यदि कोई किसी से प्रेम करता है तो वह अपने लिए करता है। दुनिया में जितने कार्य हैं व स्वार्थ से भरे पड़े हैं। लेकिन महर्षि दयानन्द जी कहते हैं प्रेम समर्पण का भाव है। यदि हम किसी से प्रेम करते हैं तो उसके प्रति समर्पण होना आवश्यक है। पति पत्नी के प्रति समर्पण भाव रखे और पत्नी पति के प्रति समर्पण करे। इसी तरह से बच्चे भी अपने माात–पिता के प्रति समर्पित होकर जीवनयापन करें। हमारे वेद एवं वैदिक सिद्धान्त इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने कहा कि पितृयज्ञ प्रतिदिन होना चाहिए। श्री भटनागर जी ने कहा कि आज बाजारवाद का युग चल रहा है। इसलिए अपने पितरों की सेवा सुश्रुसा के लिए आया रख दी जाती है वही उनकी सेवा करती है, उन्हें घुमाती है। आज समय बदल गया है। उन्होंने कहा कि सभी सुख–सुविधाएं भले ही उपलब्ध हों परन्तु उनका दुःख–दर्द सुनने वाला न हो तो यह सभी साधन एवं सुख–सुविधाएं व्यर्थ हैं। इसलिए माता–पिता को समय अवश्य देना चाहिए।

गायत्री महामन्त्र का जीवन पर प्रभाव

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 23 जून, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए फकीरे दयानन्द जी (श्री एस.पी. कुमार) ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को गायत्री मंत्र तथा प्रार्थना–उपासना का प्रथम मंत्र बहुत प्रिय था। इन मंत्रों को पढ एवं मनन कर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। आज के समय में अधिकांश व्यक्ति दुःख, कष्ट में अपना जीवन बिता रहे हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने हमें वेद ज्ञान दिया है। वेद ज्ञान हमारे जीवन को सुखमय बनाने के लिए उपयोगी विचार प्रदान करता है जिसके माध्यम से हम अपना जीवन सुखमय बना सकते हैं। मनन के द्वारा ही हमारा यह मन संयमित हो जाता है। वेद में 20,379 मंत्र हैं, इसमें से हम यदि गायत्री मन्त्र का जप कर लेते हैं तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है। जिस तरह से गाय के गुण हैं उसी तरह हमारे जीवन में गायत्री मन्त्र का गुण है। जैसे गाय का दूध हमारे प्राणों की रक्षा करता है उसी तरह से

गायत्री मन्त्र भी हमारे प्राणों की रक्षा करता है। गायत्री मन्त्र के बार–बार जप से हमारे प्राण बलवान होते हैं। यह गायत्री मन्त्र हमारे प्राणों का रक्षक है। तैतरीय ब्राह्मण गन्थ भी कहता है कि गायत्री मन्त्र के बार–बार मनन करने से हम ब्रह्म तेजस हो जाते हैं। इस मन्त्र के माध्यम से परमात्मा के समीप पहुंच सकते हैं। यदि आप चाहते हैं कि हमारे जीवन से अन्धकार और अंधेरा छट जाये तो आप गायत्री मन्त्र का जप अपने अन्दर करते जायें तो एक समय ऐसा आयेगा कि आपके सारे कार्य आसानी से होते जायेंगे। गायत्री मन्त्र को गुरु मन्त्र भी कहा गया है। यह हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। इसके जप से हमारा मन प्रफुल्लित होता है। गायत्री मन्त्र को महामंत्र भी कहते हैं। इस मन्त्र के द्वारा हम ईश्वर से मेधा बुद्धि की कामना करते हैं। यदि बुद्धि हमारी पवित्र होगी तो हमारा जीवन भी पवित्र होगा। चाहे कोई आस्तिक है या नास्तिक है, यदि वह गायत्री मन्त्र का जप करता रहेगा तो उसका कल्याण निश्चित ही हो जायेगा। यदि कोई नास्तिक भले ही हों परन्तु यदि वे बुद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं तो निश्चित रूप से ही उनका भी कल्याण हो जाता है। उन्होंने कहा कि जब हम अन्याय करते हैं तो निश्चित रूप से हमें भी कष्ट प्राप्त होता है।

बुद्धि के द्वारा ही हम नये–नये और बड़े–बड़े अनुसंधान करते हैं। यह सारा श्रेय बुद्धि को ही जाता है। यदि हमारी बुद्धि अच्छी होगी तो हम निश्चित रूप से ही बहुत अच्छे कार्य करते हुए आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि हमारे ऋषि–मुनि सभी यह मानते हैं कि ईश्वर ही हमारे जीवन को चला रहा है, हम उनको मानते हैं। उन्होंने कहा कि यदि एक महीने में एक हजार बार गायत्री मंत्र का जप करेंगे तो आपको बहुत बड़ा लाभ प्राप्त होगा। जिस तरह से सांप केंचुली से बिना कष्ट के निकल जाता है उसी प्रकार से हम कष्टों से बच जायेंगे। गायत्री मन्त्र के प्रथम चरण ऋग्वेद के माध्यम से हम यह स्वीकार करते हैं कि ईश्वर है और किसी न किसी रूप में विद्यमान है। जब हम ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं तभी वह हमारा सखा बनता है और हमारा कल्याण करता है। दूसरा चरण है प्रार्थना। जिस तरह से माता के कहने पर हम अपने पिता को मान लेते हैं और उसी से मांगते हैं उसी तरह जब हमें पता लग जाता है कि ईश्वर है तो हम उसी से मांगते हैं और वही हमें सबकुछ प्रदान करता है। आन्तरिक आवश्यकताओं को ईश्वर ही पूर्ण करते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने भी कहा है कि जब आप ईश्वर के समीप जायेंगे तो उसके गुण, कर्म, स्वभाव आपके अन्दर प्रविष्ट होने लगते हैं। उन्होंने कहा कि गायत्री मन्त्र अन्तरिक्ष की प्रथम सतह से वापस आता है। यही मन्त्र है जो चक्कर लगाकर सबसे पहले हमारे पास वापस आ जाता है। इसीलिए ऋषियों ने माला में 108 मनके डाले हैं। गायत्री मन्त्र का 108 बार जप करने से उसका प्रभाव हमें प्राप्त होता है। इसीलिए हमारे जीवन में गायत्री मन्त्र का विशेष महत्त्व है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से हमें गूगल पर सर्च करने से सब कुछ प्राप्त हो जाता है जो हम खोज करते हैं यह सब स्टोर रहता है तभी तो प्राप्त होता है। इसी तरह से ब्रह्माण्ड में सब कुछ स्टोर है और जब हम जप करते हैं तो हमें जप का लाभ प्राप्त होता है। यह ईश्वरीय व्यवस्था है।

ईश्वर ही आदि मूल है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 30 जून, 2024 के रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए फकीरे दयानन्द जी (श्री एस.पी. कुमार) ने कहा कि ईश्वर ने ही पूरी सृष्टि बनाई है। हमें यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जिस ईश्वर ने इतनी बड़ी सृष्टि बनाई वह कितना विशाल होगा। इस सृष्टि में जो कुछ भी घटना घटित हो रही है, उसके पीछे ईश्वर की ही शक्ति है। सृष्टि की हर रचना परिवर्तनशील है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा कि हम अपने घरों के पुराने सामानों को बदलकर नये–नये सामान लाकर सुसज्जित करते हैं, ये हमारे द्वारा परिवर्तन होता है इसी प्रकार ईश्वर की ही शक्ति होती है जो सृष्टि में परिवर्तन होता है।

ईश्वर द्वारा निर्मित सृष्टि की व्यवस्था के सम्बन्ध में विस्तार से बताते हुए कहा कि इस ब्रह्माण्ड में चांद, सूरज और कई ग्लैक्सियां हैं और सभी अपने–अपने ही मार्ग पर चलते हैं कभी एक–दूसरे से टकराते नहीं है। ईश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था के अनुसार ही चलते हैं जिस कारण से कभी भी कोई टकराव नहीं होता है। ईश्वर सभी का आदि मूल है। ईश्वर ही सृष्टि में विचरण करने वाली सभी आत्माओं का संचालक है। जैसे मनुष्यों का संरक्षक मनुष्य ही होता है वैसे ही आत्माओं का संरक्षक परमात्मा ही होता है। जो परम आत्मा होता है जिसे हम परमात्मा कहते हैं। वह सर्वगुण सम्पन्न एवं सर्वव्यापक है। उन्होंने बताया कि परमात्मा ने मनुष्य को इतना विशाल मन दिया है। वह अभी बैठा यहाँ हैं और मन में विचार आने पर तुरन्त अमेरिका, दिल्ली, इंग्लैण्ड आदि जगहों पर पहुंच जाता है।

हमारी बुद्धि इतनी विशाल है कि हम इसका जितना अधिक प्रयोग करते हैं हमें उतना अधिक ज्ञान मिलता है। ईश्वर ने मनुष्य को चमत्कारी बुद्धि और मन दिया है जिस कारण से हम सभी प्रकार के कार्य कर पाते हैं। जो अन्य जीव–जन्तुओं को नहीं दिया है। हमें जितनी भी अधिक भौतिकता दिखाई देती है हम उसे मन से प्राप्त करते हैं। यदि हम भौतिकता से अलग होकर ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं तो उसमें भी हमारा मन ही साधन बनता है। मन को कर्मेन्द्रीय और ज्ञानेन्द्रीय अर्थात् उभेन्द्रीय माना गया क्योंकि मन के द्वारा ही हम ईश्वर या भौतिकता को प्राप्त करते हैं। मन के माध्यम से ही हमारी कर्मेन्द्रियाँ कार्य करती हैं और ज्ञानेन्द्रियाँ भी कार्य करती हैं। हम मन के माध्यम से ही भौतिकता एवं मोक्ष दोनों को ही प्राप्त कर सकते हैं। हम वेद के ज्ञान को पाकर इस आवागमन से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। यदि ईश्वर को जानना है, आदिमूल कौन है तो हमें वेद ज्ञान को समझना होगा। मन ही हमें परमात्मा से मिला सकता है। जब हम ईश्वर के शरण में जाते हैं तो हम सांसारिक दुःख–सुख से मुक्ति पा जाते हैं। यदि आप भौतिकता में ही लिप्त रहेंगे तो आपको निश्चित रूप से ही आवागमन में लगे रहना होगा। उन्होंने कहा कि हमारे संस्कार मन में रहते हैं आत्मा में नहीं होते हैं। मन जड़ है और अदृश्य है। मन चलता नहीं है वह जड़ है। मन हमेशा आत्मा के साथ रहता है। जैसे एक ही स्टेशन पर दो गाडियाँ विपरीत दिशा में खड़ी होती है तो दूसरी गाड़ी के चलने से हमें अपनी गाड़ी चलती प्रतीत होती है। यह भ्रम की स्थिति है। यही भ्रम हमें होता है कि हमारा मन चलता है जबकि मन जड़ है चलता नहीं, केवल चलता प्रतीत होता है।

जन्मना जाति मिथ्या

– मोतीलाल गुप्ता

यदि एक वकील के घर बेटा पैदा होवे तो क्या आप उसे जन्म से वकील मान लेंगे? इसी प्रकार से क्या डॉक्टर के बेटे को जन्म से डॉक्टर मान लेंगे? क्या वैज्ञानिक के बेटे को जन्म से वैज्ञानिक मान लेंगे? नहीं न! यदि नहीं मानेंगे तो ब्राह्मण का बेटा जन्म से ब्राह्मण कैसे हुआ? क्षत्रिय और शूद्र का बेटा भी जन्म से क्षत्रिय और शूद्र कैसे होगा, अर्थात् नहीं होगा। इसलिए गुण, कर्म, स्वभाव, योग्यता से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र की पहचान होनी चाहिए और सत्य को स्वीकार करना चाहिए।

वेदों के अनुसार यही मानना ठीक है। महाभारत काल से पहले यही मान्यता थी। घटिया मानसिकता के लोगों ने संसार में भ्रांति फैला रखी है जिस कारण से लोग जन्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की पहचान करते हैं। यह असत्य, हानिकारक तथा अन्यापूर्ण एवं वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध है। वेदा आधारित मान्यताओं को बढ़ावा देना चाहिए। आर्य समाज को आगे बढ़कर इसका प्रचार–प्रसार करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी जन्मना जाति का विरोध किया है।

मो. – 9219251849

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

– पं० यशपाल सिद्धान्तालंकार

आर्य जाति के पूर्व विद्वानों, ऋषियों, मुनियों तथा जन साधारण का अनादिकाल से यह विश्वास चला आया है कि वेद ईश्वर प्रणीत होने से अपौरुषेय अतएव निर्भ्रान्त हैं। वेद, अनादि, अनन्त और नित्य हैं। वेद में शब्दार्थ–सम्बन्ध भी नित्य है। वैदिक धर्म का मुख्य सनातन सिद्धान्त यह है कि वेद सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व निर्मित हुए। सब ज्ञान और विद्याओं का मूल वेद में है। वेद से ही सब ज्ञान साक्षात् अथवा परम्परा से उत्पन्न हुआ और वैदिक सत्य का ही समयान्तर में विकास हुआ। संसार के सब माननीय तथा प्रचलित धर्मों और धर्मग्रन्थों में सत्य का जो अंश उपलब्ध होता है उसका सम्बन्ध परम्परा रूप से वेदों के ही साथ है। ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त आर्यावर्त्त में जितने विद्वान्, महात्मा, ऋषि और मुनि हुए हैं उनका सदा से ही यह विश्वास चला आया है कि वेद परमात्मा की वाणी है। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को धर्माधर्म, पाप–पुण्य, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान देने के लिये परमात्मा ने वेद का ज्ञान दिया। यदि सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा कोई ज्ञान न देते तो उस समय के मनुष्यों को धर्माधर्म का ज्ञान स्वतः नहीं हो सकता। मनुष्य की बुद्धि धर्माधर्म का ज्ञान करने में अपर्याप्त है। बड़े–बड़े विद्वानों की बुद्धि भी इसके निर्णय करने में कई बार असमर्थ हो जाती है। कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेक अत्यन्त कठिन है।

वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने में वेद का प्रमाण –

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।। –यजुर्वेद 31/7

अर्थात् उस सर्वहुत (सर्वपूर्ण) पुरुष से ऋग्वेद, सामवेद, छन्दांसि (अथर्ववेद) और यजुर्वेद उत्पन्न हुए। उक्त मन्त्र में यज्ञ शब्द विष्णु का वाचक है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि "यज्ञो वै विष्णुः" अर्थात् सर्वव्यापक भगवान् विष्णु को यज्ञ कहते हैं। तात्पर्य यह है कि उस सर्वव्यापक परमेश्वर से चराचर सृष्टि उत्पन्न हुई और मनुष्य की सहायता के लिये, जो इस सृष्टि के विषय में विचार करने को समर्थ है, वेद भी उसी परमात्मा से उत्पन्न हुए।

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।

सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम् स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

–अथर्व० 10। प्रपा० 23, अनु० 4। मं० 20

जिस सर्वशक्तिमान् परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उत्पन्न हुए हैं वह देव कौन है? यह प्रश्न है। इसका उत्तर वेद के इसी मन्त्र में दिया है कि ऋग्वेद का पैदा करने वाला स्कम्भ अर्थात् सारे संसार का धारण करने वाला परमात्मा है।

इसका भावार्थ यह है कि याज्ञवल्क्य ऋषि कहते हैं "हे मैत्रेयि, उस महान् परमेश्वर से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद श्वासोच्छ्वास के समान सहज ही प्रकट हुए।" जैसे मनुष्य का श्वास सहज ही भीतर से बाहर निकलता है और फिर भीतर चला जाता है उसी तरह वेद सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व परमेश्वर से सहज उत्पन्न होते हैं और सृष्टि के अन्त में (प्रलय के समय) उसी परमेश्वर में लीन हो जाते हैं। 'वेद सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व उत्पन्न हुए', इससे यह भी नितान्त स्पष्ट हो जाता है कि परमात्मा का मनुष्य जाति पर कितना अनुग्रह है। मनुष्य शब्द की व्युत्पत्ति यह है कि 'मननात् मनुष्यः' अर्थात् जो मनन कर सकता है उसे मनुष्य कहते हैं।

यद्यपि मनुष्य विचारवान् होने से तथा बुद्धियुक्त होने से विचार करने का सामर्थ्य रखता है और वह इस सृष्टि के घटनाचातुर्य और तन्नियामक शक्तियों का ज्ञाता है, तथापि यदि उसे किसी निर्जन वन में रख दिया जाय जहां मृत्यु–पर्यन्त उसका किसी भी मनुष्य से सम्बन्ध न हो तो वह केवल अपनी बुद्धि के आधार पर कभी भी उन्नति न कर सकेगा और सर्वथा ज्ञान–शून्य रहेगा। यदि परमात्मा सृष्टि के प्रारम्भ में वेद का ज्ञान न देता तो अभी तक सब मनुष्य पशु के समान बने रहते। मनुष्य का ज्ञान केवल परावलम्बी है। जैसे बिना उसकी सहायता के न तो आंखें कुछ देख सकती हैं और न कान कुछ सुन सकते हैं वैसे ही मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान चतुर्विध पुरुषार्थ की प्राप्ति में बिना वेद की सहायता के असमर्थ है।

अन्यत्रमना अभूवं नादर्श अन्यत्रमना अभूवं नाश्रौषम्।

यह बृहदारण्यक का वचन है। यदि मन स्थिर न हो या किसी उपाधि के कारण व्यापार विमुख हो जाय तो सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियों के उपस्थित रहने पर भी किसी कार्य को करने में इन्द्रियां सर्वथा असमर्थ हैं। सारांश यह है कि जैसे मन की सहायता के बिना ज्ञानेन्द्रियां निरुपयोगी हो जाती हैं वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान के बिना मन तथा बुद्धि विकसित नहीं हो सकती और मनुष्य चतुर्विध पुरुषार्थ के सम्पादन में असमर्थ हो जाता है।

वेद के ईश्वरीय तथा नित्य होने में ऋषियों की सम्मति वैशेषिक सूत्रकार कणाद मुनि कहते हैं कि– तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्। –वैशेषिक 1/1/3

अर्थात् वेद ईश्वरोक्त हैं। इनमें सत्य–विद्या और पक्षपातरहित धर्म का ही प्रतिपादन है। इससे चारों वेद नित्य हैं। ऐसा ही सब मनुष्यों को मानना उचित है। क्योंकि ईश्वर नित्य है अतः उसका ज्ञान भी नित्य है।

इसी प्रकार न्यायशास्त्र में गौतम मुनि कहते हैं कि– "मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्।" –2/1/67

अर्थात् वेदों को नित्य ही मानना चाहिए क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज पर्यन्त ब्रह्मादि जितने आप्त होते आये हैं वे सब वेदों को नित्य ही मानते आये हैं। आप्त पुरुषों का कथन प्रामाणिक होता है क्योंकि आप्त उन्हें कहते हैं जो धर्मात्मा, कपट, छलादि दोषों से रहित, सब विद्याओं से युक्त महायोगी और सत्यवक्ता हैं, जिनमें लेशमात्र भी पक्षपात नहीं था, उन्होंने वेदों को ईश्वरप्रणीत तथा प्रामाणिक माना है। जैसे आयुर्वेद के एक देश में कहे औषध और पथ्य के सेवन से रोग की निवृत्ति होती है और उनके एक देश में कथित बात के सत्य होने से उसके दूसरे भाग का भी प्रमाण होता है उसी प्रकार वेद के एक देश में कहे अर्थ की सत्यता सिद्ध होने से उससे भिन्न जो वेदों के भाग हैं जिनका कि अर्थ प्रत्यक्ष न हुआ हो उनको भी प्रामाणिक मानना चाहिए।

योगशास्त्र में पतञ्जलि मुनि कहते हैं– "स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।" –पातञ्जल योगशास्त्र 1/126

अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा इत्यादि ऋषियों से लेकर अद्यावधि जितने भी मनुष्य पैदा हुए हैं और भविष्य में होंगे उन सबका आदि गुरु परमेश्वर है, क्योंकि वेद द्वारा सत्यार्थ का प्रकाश करने से। परमात्मा सृष्टि के आरम्भ में वेद का ज्ञान न देता तो मनुष्यों को अवस्था सर्वथा पशुतुल्य होती तथा धर्माधर्म, विवेक और सदसद् विचार में मनुष्य सर्वथा असमर्थ होता।

सांख्यशास्त्र में कपिल मुनि कहते हैं कि– "निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्" –1/41

परमेश्वर की स्वाभाविक विद्या तथा ज्ञान–शक्ति से प्रकट होने से वेदों का नित्यत्व और स्वतः प्रमाणत्व सब मनुष्यों को स्वीकार करना चाहिए।

वेदान्तशास्त्र में व्यास मुनि कहते हैं– शास्त्रयोनित्वात्। –1/1/3

अर्थात् ऋग्वेदादि चारों वेद अनेक विद्याओं से युक्त हैं और सूर्य के समान सब अर्थों का प्रकाश करने वाले हैं। उनका बनाने वाला सर्वज्ञतादि गुणों से युक्त परमात्मा है, क्योंकि सर्वज्ञ ब्रह्म से भिन्न कोई सर्वज्ञतागुणयुक्त वेदों का निर्माण नहीं कर सकता, किन्तु वेद के आधार पर ही अन्य शास्त्रों के बनाने में समर्थ हो सकता है जैसे पाणिनि आदि मुनियों ने व्याकरणादि शास्त्रों को बनाया है, उनमें विद्या के एक–एक भाग का प्रकाश किया है। सब विद्याओं से युक्त वेदों के बनाने में कोई समर्थ नहीं हो सकता। परमेश्वर निर्मित वेदों के पढ़ने–विचारने और उसी के अनुग्रह से मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं।

कई लोगों को यह शंका होती है कि निराकार ईश्वर से शब्दमय वेद कैसे उत्पन्न हो सकते हैं। इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है। उसके विषय में ऐसी शंका निरर्थक है क्योंकि मुख, प्राणादि साधनों के बिना भी परमेश्वर में मुख, प्राणादि के कार्य करने की सामर्थ्य विद्यमान है। यह दोष तो जीव में आ सकता है कि वे मुखादि के बिना कार्य नहीं कर सकते क्योंकि मनुष्य अल्पसामर्थ्य वाला है। साथ ही इस बात को इस तरह भी समझा जा सकता है कि जैसे मन में मुखादि अवयव नहीं हैं तथापि उसमें प्रश्नोत्तर रूप से नाना शब्दों का उच्चारण मानस–व्यापार में होता रहता है वैसे ही परमेश्वर में भी जानना चाहिए। वैसे भी सर्वशक्तिमान् होने से परमात्मा किसी भी कार्य के करने में किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं रखता क्योंकि वह अपने सामर्थ्य से ही

शेष पृष्ठ 8 पर

ऋग्वेद-1.3.6

इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः।
सुते दधिष्व नश्चनः।।6।।

इन्द्र - ब्रह्माण्ड में विद्यमान वायु, हमारी प्राणवायु (यह दोनों दृष्टिकोण परमात्मा को व्यक्त करते हैं)

आयाहि - कृपया हमारे पास आईये

तूतुजानः - शीघ्र गतिवान

उप - निकट आना

ब्रह्माणि - बुद्धि में प्रकाशित लोग

हरिवः - वेग आदि गुणों से युक्त, इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाला

सुते - लाभकारी सांसारिक पदार्थ तथा महान शुभ गुण

दधिष्व - धारण करते हैं

नश्चनः - भोजन करने के लिए, पाचन तथा अन्य क्रियाओं के लिए, वस्तुओं का प्रयोग करने के लिए, ज्ञान प्राप्ति के लिए तथा शुभ गुणों के अनुपालन के लिए

व्याख्या :-

वायु के महत्त्व की अनुभूति से परमात्मा की अनुभूति किस प्रकार की जा सकती है?

सारे ब्रह्माण्ड में चारों तरफ व्याप्त वायु परमात्मा का प्रतिनिधित्व करती है। हम अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रतिक्षण परमात्मा का स्वागत प्राण के रूप में करते हैं। यह गतिवान होती है, अतः हमारी समस्त गतिविधियाँ तथा कार्य इसी वायु के कारण सम्भव होते हैं। यहाँ तक कि बुद्धि में प्रकाश करने के लिए तथा गति के लिए दिव्यताएँ हमारे पास आती हैं। हम जो भोजन करते हैं वह पाचन क्रिया से निकलता है और इसी प्रकार एक स्वस्थ जीवन के लिए हम कई अन्य क्रियाएँ करते हैं। स्वस्थ जीवन के साथ ही प्रत्येक प्राणी अपने साथ सम्बद्ध वस्तुओं को धारण करता है जैसे - भिन्न-भिन्न पदार्थ, ज्ञान तथा शुभ गुण। इसका अभिप्राय यह है कि हमारे जीवन की सभी गतिविधियाँ वायु पर आश्रित हैं। वायु परमात्मा का ही एक उपहार है।

इस प्रकार इस ज्ञान तथा स्वार्थ रहित और अहंकार रहित गतिविधियों के बल पर हम परमात्मा की अनुभूति कर सकते हैं। इन लक्षणों को हमें दैनिक भोजन की तरह अपने जीवन में धारण करना चाहिए जिससे हम उस अनुभूति की अवस्था को जारी रख सकें।

जीवन में सार्थकता

वायु का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

वायु का अर्थ है जारी रहना। वायु के बिना तीन मिनट में हमारी मृत्यु हो सकती है। वायु हमारे जीवन की सभी गतिविधियों के लिए महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार भोजन के पाचन में तथा सभी गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए वायु आवश्यक होती है, सभी सांसारिक पदार्थों तथा शुभ गुणों का प्रयोग करने के लिए हम अपने जीवन को धारण करते हैं, इसी प्रकार हमें अच्छे भविष्य के लिए बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयास करने चाहिए।

हमारे उच्चाधिकारियों तथा वृद्ध परिजनों ने भूतकाल में अनेकों बुद्धिमत्तायुक्त कार्य किये जिससे हमारा वर्तमान सुविधाजनक बना। स्वाभाविक है कि वे हमसे भी उसी बुद्धिमत्तायुक्त कार्यों की आशा रखेंगे जिससे एक अच्छे भविष्य का निर्माण हो सके।

हमारे बुद्धिमत्तायुक्त तथा शुभ गुणयुक्त कार्यों के बल पर ही हमारा एक स्तर बनता है और हमारे जीवन की गतिविधियाँ आगे बढ़ती हैं। जीवन की सभी गतिविधियों का उद्देश्य बुद्धिमत्ता तथा शुभ गुणों को बढ़ाने में ही निहित होना चाहिए जिससे यह परम्पराएँ भविष्य में भी चलती रहें।

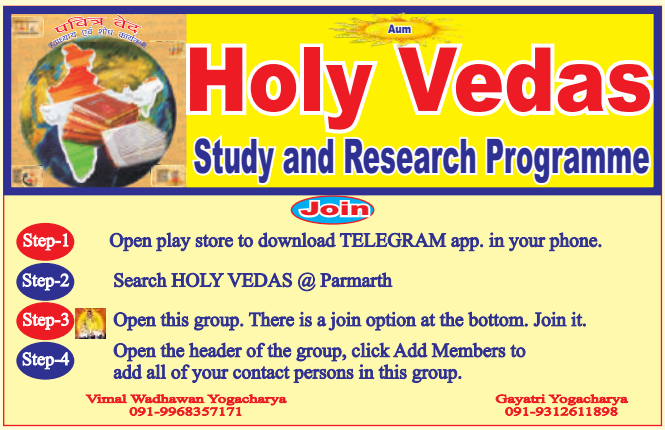

Rigveda-1.3.6

इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः।
सुते दधिष्व नश्चनः।।6।।

Indraa aayahi tuutujaana upa
brahmaani harivah
Sute dadhishva nashchanah.

Indra : The air in universe, our pranic air (both the dimensions are attributable to God)

aayahi : please come to us

tuutujaana : quick in motion

up : get near

brahmaani : enlightened persons

harivah : for movements, as controller of senses

sute : beneficial worldly objects and great virtues

dadhishva : are held

nashchanah : for consuming food, its digestion and other processes, for other purposes like using materials, acquiring knowledge and practicing virtues.

Elucidation

How can we realise God, by realising the importance of air?

The wide spread air in the universe represents God. We welcome God in our individual life every moment as prana. It's quick in motion, so our movements and activities take place due to that air. Even Divinity comes near us for the very purpose of enlightenment and movements. Food that we consume passes through digestion and other processes for the purpose of continuity of a healthy life. With such a healthy life, everyone wishes to hold all their belongings i.e. materials, knowledge and virtues. It means all our life activities are dependent on air, a gift of God.

Thus, we can realise God on the strength of knowledge, selfless and egoless activities. We should hold these features as daily food to continue with our realised state.

Practical Utility in life

What's the importance of air in life?

Air means continuity. Without air in 3 minutes we can die. Air is important for all life activities. Just as we hold air to digest food and to perform other activities; we hold life to use all worldly objects and our virtues, similarly we should make intelligent efforts for a better future.

Our higher authorities/elders made intelligent efforts in past to facilitate our present. Obviously, they would expect same intelligence and activities from us for a better future.

On the strength of our intelligence and virtues, we get a status and our life processes are carried on. The purpose all life activities should be to increase our intelligence and virtues to ensure its continuance in future.

पृष्ठ 5 का शेष

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

सब कार्यों को कर सकता है। इतने महान् ब्रह्माण्ड तथा लोकलोकान्तरों को बिना किसी की सहायता के जैसे परमात्मा निर्माण कर सकता है वैसे ही मुखादि अवयव के बिना भी परमेश्वर वेद का ज्ञान दे सकता है। इस पर यह भी शंका हो सकती है कि इतने महान् ब्रह्माण्ड के रचने का सामर्थ्य तो परमेश्वर के बिना अन्य किसी में होना सम्भव नहीं, परन्तु जैसे व्याकरणादि शास्त्र के रचने में मनुष्यों का सामर्थ्य हो सकता है वैसे ही वेदों की रचना भी मनुष्य कर सकता है। इसका उत्तर यह है कि वेदादि को पढ़कर ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद ही ग्रन्थ रचने का सामर्थ्य किसी को हो सकता है। उसके पढ़ने तथा ज्ञान के बिना कोई भी मनुष्य विद्वान् नहीं हो सकता। जैसे इस समय भी किसी शास्त्र को पढ़कर और किसी का उपदेश सुनकर ही तथा मनुष्यों के पारस्परिक व्यवहारों को देखकर ही मनुष्यों को ज्ञान होता है। उदाहरणार्थ किसी मनुष्य के बालक को जन्म से एकान्त में रखके, उसको अन्न तथा फल युक्ति से देवे, परन्तु उस के साथ भाषणादि व्यवहार लेशमात्र भी न करे और मृत्युपर्यन्त उससे किसी भी मनुष्य का सम्बन्ध न होने दे तो वह कभी भी विद्वान् नहीं हो सकता और सभ्यता तथा ज्ञान की साधारण बातों से भी अनभिज्ञ रहेगा। असीरिया के महाराज असुरवाणिपाल तथा मुगलसम्राट् अकबर के परीक्षण इस बात के ज्वलन्त प्रमाण हैं।

वेदों की उत्पत्ति ईश्वर से होने के कारण यह भी निर्विवाद है कि वेद नित्य अर्थात् त्रिकालाबाधित हैं और उनके सिद्धान्त सर्वव्यापक हैं, क्योंकि ईश्वर का सामर्थ्य नित्य है। वेदों का कभी नाश नहीं होता। जिस पत्र पर वेद लिखे गये हैं उनका नाश होने पर भी वेद–ज्ञान का कभी नाश नहीं होता। पठन–पाठन परम्परा का लोप हो जाने पर भी वह ईश्वरीय ज्ञान नष्ट नहीं होता। इसका कारण यह है कि ईश्वर के पास वेदज्ञान सदा विद्यमान रहता है। वह स्वयं वेदरूप अर्थात् ज्ञानरूप है। ईश्वरीय ज्ञान नित्य और अव्यभिचारी है। इसलिये वेदों का शब्दार्थ सम्बन्ध जैसा वर्तमान समय में दीख पड़ता है वैसा ही वह पूर्व कल्पों में था और वैसा ही भविष्य में रहेगा, जैसा कि वेद में कहा है कि– "सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्"। अर्थात् पूर्वकल्पों में परमेश्वर ने सूर्यचन्द्रादि सारी सृष्टि की जैसी रचना की थी वैसी ही उसने इस सृष्टि की भी की है। ईश्वरीय ज्ञान पूर्ण है अर्थात् न उसका नाश होता है और न उसमें वृद्धि होती है। यद्यपि ईश्वरीय ज्ञान अनन्त है, तथापि वेद द्वारा परमात्मा उतना ही ज्ञान देता है जितना कि मनुष्य के लिए आवश्यक है। जिसके द्वारा मनुष्य अभ्युदय तथा निःश्रेयस की प्राप्ति कर सके। यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि पुस्तक के नाश से वेद का नाश नहीं हो सकता, क्योंकि वेद तो शब्दार्थ–सम्बन्ध स्वरूप हैं, मसि, कागज, पत्र, पुस्तक और अक्षरों की बनावटरूप नहीं। यह जो लेखनादि सामग्री है यह मनुष्य निर्मित है। इससे यह अनित्य है, परन्तु ईश्वरीय ज्ञान नित्य है। इससे यह पूर्णतया स्पष्ट है कि पुस्तक के अनित्य होने से वेद अनित्य नहीं हो सकते क्योंकि वे बीजाङ्कुरन्याय से ईश्वर के ज्ञान में नित्य वर्तमान रहते हैं।

सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर से वेदों की प्रसिद्धि होती है और प्रलय में जगत् के रहने से उनकी अप्रसिद्धि होती है। इस कारण से वेद नित्यस्वरूप ही बने रहते हैं। जैसे इस कल्प के आरम्भ में शब्दार्थ–सम्बन्ध वेदों में है इसी प्रकार से पूर्वकल्प में भी था और आगे भी होगा। ऋग्वेदादि चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की है और इसमें शब्दार्थ–सम्बन्ध तथा क्रम जैसा अब है इसी प्रकार रहेगा, क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान के नित्य होने से उस में वृद्धि, क्षय तथा विपरीतता नहीं हो सकती। भारतीय शास्त्रकारों ने शब्दों को भी नित्य माना है। जितने भी अक्षरादि अवयव हैं, वे सब कूटस्थ अर्थात् विनाशरहित हैं। कान से जिनका ग्रहण होता है और वाणी से उच्चारण करने से प्रकाशित होते हैं और जिनका निवास–स्थान आकाश है उनको शब्द कहते हैं। शब्द आकाश की भांति सर्वत्र विद्यमान हैं, परन्तु जब तक उच्चारण क्रिया नहीं होती तब तक वे सुनने में नहीं आते। जब प्राण तथा वाणी की क्रिया से उच्चारण किये जाते हैं तब प्रसिद्ध होते हैं। जैसे 'गः' इसके उच्चारण में जब तक उच्चारण क्रिया गकार में रहती है तब तक औकार में नहीं, जब औकार में है तब गकार और विसर्जनीय में नहीं रहती। इसी प्रकार वाणी की क्रिया की उत्पत्ति और नाश होता है, शब्दों का नहीं। किन्तु आकाश में शब्द की व्याप्ति होने से शब्द तो अखण्ड एकरस सर्वत्र भर रहे हैं, परन्तु जब तक वायु तथा वाग् इन्द्रिय की क्रिया नहीं होती तब तक शब्दों का उच्चारण तथा श्रवण भी नहीं होता। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि शब्द आकाश की तरह नित्य हैं। शब्दों के नित्य होने से शब्दों का समुच्चय वेद भी नित्य है।

वेद का लक्षण

विद्याधर स्वामी ने वेदार्थ प्रकाश में वेद का लक्षण इस प्रकार से किया है– "इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकं उपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः"। अर्थात् जो ग्रन्थ इष्ट वस्तु की प्राप्ति और अनिष्ट वस्तु के त्याग करने का अलौकिक उपाय सिखलाता है, उसको वेद कहते हैं। यहां 'अलौकिक' पद से प्रत्यक्ष और अनुमित प्रमाणों की व्यावृत्ति की गई है। जैसे – प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।

एनं विन्दति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता।।

अर्थात् जो उपाय, प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाणों से भी मालूम नहीं होता, वह वेदों से जाना जाता है। इसलिये वेदों का वेदत्व सिद्ध होता है।

ऋषि दयानन्द जी वेद का लक्षण इस प्रकार लिखते हैं कि छन्द, मन्त्र, वेद, निगम, मन्त्र तथा श्रुति ये सब नाम पर्यायवाचक हैं। अविद्यादि दुःखों के दूर करने तथा सुख देने से वेद का नाम 'छन्द' है। तथा वेदाध्ययन से सब विद्याओं की प्राप्ति होती है और उससे मनुष्य प्रसन्न होता है इसलिये भी वेद का नाम 'छन्द' है। गुप्त पदार्थों की अभिव्यक्ति का साधन होने से 'मन्त्र' नाम वेद का है तथा सब सत्य पदार्थों का परिज्ञापक होने से भी मन्त्र नाम वेद का है। सब विद्यायें जिससे सुनी या जानी जाती हैं, वह 'श्रुति' भी वेद का ही नाम है। ऋषि दयानन्द के अपने शब्दों में–

(1) अविद्यादिदुःखानां निवारणात् सुखैराच्छादनाच्छन्दो वेदः।

(2) गुप्तानां पदार्थानां भाषणं यस्मिन्वर्त्तते स मन्त्रो वेदः। अथवा मन्यन्ते ज्ञायन्ते सर्वैर्मनुष्यैः सत्याः पदार्थाः येन यस्मिन्वा स मन्त्रो वेदः।

(3) श्रूयन्ते वा सकला विद्या यया सा श्रुतिर्वेदो मन्त्रश्च श्रुतयः।

(4) तथा निगच्छन्ति नितरां जानन्ति प्राप्नुवन्ति वा सर्वाविद्या यस्मिन् स निगमो वेदो मन्त्रश्चेति।

शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण

प्रत्येक रविवार को सत्संग के पश्चात् दोपहर 12 बजे से आर्य समाज भवन में शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण होता है। कृपया प्रातःकालीन समय में खाली पेट शुगर माप कर आयें।

Free Ayurvedic Eye Drops

Very costly drops prepared with medicinal water of Holy Mother Ganga, Saffron and other material. Made available with courtesy of Shri Subhash Garg ji.

फकीरे दयानन्द (एस पी कुमार)
9342254131

विमल वधावन योगाचार्य
9968357171

52, (Sy. No. 38), L.N. Pura, Adjacent to The Brilliant School, Behind Bata Showroom, ITPL Road, Kundalahalli Gate, Bangalore-560037